Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. XI, Issue No. XXI, Apr-2016, ISSN 2230-7540

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. XXI, April-2016, ISSN 2230-7540

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान

Pushpa Rani*

Assistant Professor (History) B.P.S.M.V.R.C Kharal, Jind (Haryana)

----------X----------

समाज का स्वरूप और उसके निरन्तर गतिशील रहने की प्रक्रिया में नारी और पुरूष दोनों का समना योगदान रहता है। कुछ ऐसे प्राकृतिक कारण रहे कि विश्व के अधिकांश देशों में पुरूष प्रधान समाज की स्थापना हुई है। ऐसी स्थिति में नारी का स्थान समाज में द्वितीय श्रेणी का रहा। सामन्तवादी समाज ने नारी के स्थान को और भी गिराया। इसलिए इस बात का साक्षी है कि जब भी आवश्यकता हुई तथा जब भी उन्हें उपयुक्त अवसर मिला, नारी वर्ग ने अपनी ने अपनी जिद्द करके इस धारणा को झुठलाया है कि इसका स्थान घर की चारदीवारी में सिर्फ मातृत्वबोध तक सीमित है।

भारतीय स्त्रियों का मुक्ति आंदोलन पश्चिमी धारणा से एकदम भिन्न रहा है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का बराबर का योगदान रहा है।

कस्तूरबा गाँधी –

कस्तूरबा गाँधी जी को सहचरी ही नही, सहधर्मी, सहकर्मी सहयोगी, मंत्रिणी, आज्ञाकारी सैनिक, प्रेरणा सभी कुछ थी।

स्वतंत्रता संग्राम में उनकी गाँधी जी के साथ कदम ब कदम बहुआयामी भूमिका रही। बा ने 1920–22, 1930–32, 1942 में धरनों – जुलूसों का नेतृत्व किया।

लाठियां खाई। जेल गयी, गाँधी जी के उपवासों के समय उनका सम्बलबनी, राष्ट्र उनकी इस देन को कभी नही भूल सकता।

पार्वती देवी –

पार्वती देवी ने 1919 से 1942 तक हर स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी भाग लिया और सामाजिक कार्यो में भी सक्रिय रही। 1922 को पुलिस इन्हें गिरफतार करके ले गई। उन पर मुकदमा चला और उन्हें 2 साल की सख्त कैद की सजा सुनाई गई। उस समय सारे भारत में वह पहली पहिला थी, जो कांग्रेस आंदोलन में भाग लेते हुए इतनी लम्बी अवधि के लिए जेल गई व जेल में उन्हें कड़ी कैद के तहत बान बटना पड़ा।

सरोजनी नायडू –

1917 से 1947 तक के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की कोई ऐसी महत्वपूर्ण घटना न थी, जिससे सरोजनी नायडू ने आगे बढ़कर भाग न लिया हो। 1930 के नमक सत्याग्रह में सम्मिलत हुई। दांडी यात्रा में भी वह गाँधी जी के साथ थी। गाँधी जी की गिरफतारी के बाद उन्हें भी बंदी बना लिया गया। 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में कूद पड़ी और फिर जेल गई। स्वतंत्र भारत में उन्हे पहली महिला राज्यपाल का पद मिला।

मैडम भीकाजी कामा –

इन्हें भारतीय क्रांति की माँ कहा जाता है। 1857 के बाद के स्वाधीनता संग्राम के प्रथम चरण में 35 वर्षो तक यूरोप के एक पारसी महिला की अजेय वाणी पूरी प्रखरता से गुंजती रही थी और भारत की आजादी के लिए विश्व जनमत को तैयार कर ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को आंतक और आशंका से दहलाती रही थी। राष्ट्रीय झण्डे का प्रथम प्रारूप मैडम कामा, वीर जावरकर व उनके कुछ साथियों ने मिलकर 1905 में लंदन में तैयार किया था। वन्दे मातरम् के प्रकाशन द्वारा स्वतंत्रा का जय–घोष और क्रांतिकारियों को हर तरह की सहायता मैडम कामा के जीवन का मिशन बन गया था।

अरूणा आसफ अजी –

सन् 1942 में जिन महिलाओं के नाम उभर कर सामने आते है, उनमें सर्वप्रथम अरूणा आसफ अली का नाम लिया जाता है। अपने सशक्त भूमिगत आंदोलन के कारण उन्हें सन् 42 की हिरोईन भी कहा जाता है। 1930 के नमक सत्याग्रह में वह राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम की एक अग्रणी नेत्री के रूप में सामने आ गई थी। 1932 में अरूणा आसफ अली की साहसी भूमिगत मोर्चाबंदी के लिए उन्हें सन् 42 की रानी झांसी की संज्ञा दी। आजादी के बाद 1947 में दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षता और 1958 में नगर निगम की पहली महिला मेयर चुनकर राजधानी दिल्ली में उन्हें सम्मानित किया। पर उनका वास्तविक सम्मान तो जनता के दिलों में था।

सुचेता कृपलानी –

सुचेता कृपलानी को एक ऐसी महत्वकांक्षी महिला माना जाता था। जिनको महत्वकांक्षी महिला माना जाता था। जिनकी महत्वकाक्षाएं देश की उन्नति के साथ जुड़ी थी। राष्ट्रीयता और खादी के पारिवारिक परिवेश में पल कर स्वाधीन भारत के सपने वह बचपन से ही देखा करती थी। गाँधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए उनके नाम का चुनाव किया था। आजादी के लिए लड़ते हुए वे गिरफतार हुई। स्वतंत्र भारत में पहली मुख्यमंत्री बनने का सौभाग्य उनको प्राप्त है।

www.ignited.in

ऐंटी बेसैंट –

भारतीय राष्ट्रीयता ग्रहण कर, भारतीय जीवन में घुलमिलकर और भारतीय स्वाधीनता संग्राम से जुड़कर यह महिला भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद तक पहुंची। उनकी सहानुभूति गरम दल के साथ थी। जब गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन वापिस लिया तो उन्होंने गाँधी जी के निर्णय का विरोध किया था। उन्हें भीख मांगने की राजनीति से चीढ़ थी। उन्होंने होमरूल लीग की स्थापना की। 26 जनवरी 1929 को उन्होंने लाहौर कांगेस में पूर्ण स्वराज्य की मांग का समर्थन किया। इसके बाद उन्होंने दोबारा दोनों पार्टियों की एकता के लिए जन अपीलें निकाली और काग्रेंस को पूरा सहयोग दिया।

यह कर्मठ महिला अंत तक अपने काम में लगी रही सत्य के अनुसंधान, मानवीय देश और अनुदय आज की आजादी को समर्मित डॉ. ऐनी बेरूंट का नाम भारतीय स्वतंत्रा संग्राम में बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

राजकुमारी अमृत कौर –

ये एक अग्रणी सामाजिक कार्यकर्ती, स्वतंत्रता सेनानी व राजनैतिक नेत्री थी। 1930 के नमक सत्याग्रह में वह भी थे। आंदोलन में सक्रिय हुई और बम्बई से गिरफतार होकर जेल गई। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी वे सक्रिय रही। रोज व रोज वे जुलूसों का नेतृत्व करने लगी। शिमला में एक जुलूस पर क्रूरता से लाठीचार्ज हुआ। 9 अगस्त से 16 अगस्त तक उनके नेतृत्व में निकले जुलूसों पर कुल मिलाकर 15 बार लाठीचार्ज हुआ। आखिरकर इन्हें गिरफतार कर लिया गया। बीस महीने तक इन्हें नजरबंद रखा गया। आजादी के बाद केंद्रीय मंत्रिमंडल में जब उन्हें स्वास्थ्य मंत्री का पद मिला तो, उन्होंने महिलाओं व बच्चों के लिए अनेक कल्याण योजनाऐं शुरू की। भारतीय स्वतंत्रा संग्राम में और भी बहुत सी महिलाओं की प्रमुख भूमिका रही थी जैसे – बीना देवी, सावित्री देवी, सुहासिनी गांगुली, कमला चटर्जी, कमांडर लक्ष्मी स्वामीनाथन, पूर्णिमा बनर्जी, भारदा और सरस्वती, कनकलता, अनुसूया बाई काले, कैप्टन भारती सहाय, भान्ति और शकुन्तला, कल्याणी दास, श्रीमति सुनीता देवी, अमिता सेन, रेणु सेन, बेला सिज, शोभारानी दत, सरला देवी चौधरी, शांति घोष और सुनीति चौधरी।

कमला देवी चट्टोपाध्याय –

कमला जी का पूरा जीवन साहसिक घटनाओं से भरा है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय तो जैसे वे जेल की अतिथि बन गई थी। भायद यह बात बहुत कम लोग जानते है कि भारत मे प्रथम बार चुनाव लड़ने वाली कमला देवी ही थी। उन्होंने गाँधी जी को समझाया कि वे अपने आंदोलनों को पुरूषों तक ही सीमित न रखें। कमलादेवी खुद उन असंख्य औरतों में से एक थी जिन्होंने नमक या भाराब कानूनों का उल्लंघन करते हुए सामूहिक गिरफतारी दी थी।

मणिबेन बल्लभ भाई पटेल –

ये सरदार बल्लभ भाई पटेल की पुत्री थी। मणिबेन जी ने गाँधी जी के आहवान पर 1920 के असहयोग आंदोलन में स्कूल का बहिष्कार कर दिया था और स्वतंत्रता संग्राम में निरंतर भाग लेने लगी थी। मणिबेन ने जीवनभर अविवाहित रहकर सरदार बल्लभभाई पटेल की सेवा की। जिन लोगों ने नजदीक से मणिबेन को देखा और जाना है उनका कहना है कि जिस भाँति अपने को समर्पित कर अनेक लोगों के कोप का भाजन बनकर वह सरदार की सेवा और आराम की चिन्ता रखती थी उसी ने सरकार को संभाले रखा। वरना लम्बे कारावास और अनियमितता के कारण उनका स्वास्थ्य बिल्कुल खराब हो गया होता। 1928 से 1950 तक वह पिता के साथ हर सत्याग्रह में, हर आंदोलन में सक्रिय रही।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. आशा रानी व्होरा – 'महिलाएँ और स्वराज्य', सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. सच्चिदानन्द भट्टाचार्य – भारतीय इतिहास कोष हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश।
3. रामगोपाल – भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, पुस्तक केंद्र, लखनऊ
4. ताराचंद – भारतीय स्वतंत्रता आन्दोंलन का इतिहास, नई दिल्ली।
5. आशा रानी व्होरा – भारत की अग्रणी महिलाएँ, राजपाल एन्ड सन्स, नई दिल्लीं
6. पी.एन.चौपड़ा – भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन और महिलाएँ, शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
7. तारा बली बेगम – वूमैन ऑफ इंडिया, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली।
8. सुन्दरलाल – भारत में अंग्रेजी राज, प्रसाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली।
9. अयोध्या सिंह – भारत का मुक्ति संग्राम, रेखा प्रकाशन, कलकता।
10. विश्वनाथ मुखर्जी – वंदे मात्रम का इतिहास, सरस्वती विहार प्रकाशन, हरियागंज, नई दिल्ली।
11. शचीरानी गुर्टू – विश्व की महान महिलाएँ, हिन्दी साहित्य मन्दिर, अजमेर।

Corresponding Author

Pushpa Rani*

Assistant Professor (History) B.P.S.M.V.R.C Kharal, Jind (Haryana)

E-Mail – vinodkumarnaguran123@gmail.com